Vol 4 Issue 5 Nov 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014
Available online at www.aygrt.isrj.org

GRT

अध्यापकों की कार्यशैलियाँ : पहचान एवं वर्गीकरण

मुरलीधर मिश्रा

एसोशिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान.

सारांश : कार्यस्थितियों में अध्यापक जिस ढ़ंग से कार्य करता है, उसकी वरीयताएँ कार्य शैली की रचना करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि अध्यापक द्वारा प्रदत्त विभिन्न मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, वातावरणीय, व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं संवेदी आदि तत्वों के प्रति वरीयताओं का कुल योग उसकी कार्य शैली को व्यक्त करता है। प्रस्तुत अध्ययन अध्यापकों की कार्य शैलियों की पहचान एवं वर्गीकरण करने हेतु किया गया। इस गुणात्मक अध्ययन में बुनियादी सिद्धांत अध्ययन की मान्यताओं के अनुरूप कार्यशैली से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य के पुनरीक्षण; विषय वस्तु विश्लेषण; विद्यालयीन, कक्षागत एवं विविध संस्थितियों में अध्यापकों के कार्य–व्यवहारों के अवलोकन तथा गहराई से सूचना प्राप्ति व संकलित सूचनाओं की बेहतर समझ हेतु अध्यापकों से साक्षात्कार किया गया। निष्कर्षतः अध्यापकों की कार्यशैलियों को कुल नौ द्विध्रुवीय रूपों– विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय कार्यशैली, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक तथा दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक में वर्गीकृत किया।

प्रस्तावनाः–

शोधकर्ता, प्रबन्धन वैज्ञानिक एवं कार्य व्यवहार में रुचि रखने वाले व्यक्तियों ने कार्यकर्ताओं की विशिष्टताओं पर ध्यान केन्द्रित किया है। फलतः कार्यशैली का सम्प्रत्यय व्यवहार में आया है। कार्य शैली के सम्प्रत्यय को विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। प्रेशनिग (1994) के अनुसार कार्यशैली को कार्य क्षेत्र में व्यक्तियों द्वारा नवीन एवं कठिन सूचनाओं को आत्मसात् करने व बनाये रखने चिन्तन अथवा ध्यान केन्द्रण करने, दैनिक कार्यों और समस्याओं को हल करने की रीति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। फेयरस्टीन (1996) के अनुसार कार्य शैली 'कार्यों का निष्पादन करते हुए एक व्यक्ति की संज्ञानात्मक, व्यवहारात्मक और शरीर–क्रियात्मक पद्धति' है। ऑलशेस्की एवं शेलट (2003) के अनुसार–कार्य शैलियों में कार्यकर्ता की विशेषताएँ सम्मिलित होती हैं जो व्यक्ति के विशिष्ट प्रदर्शन के साथ ही साथ अध्यापक की कार्य के प्रति नियमित स्वीकार्यता और कार्य प्रदर्शन को प्रभावित करती हैं। आस्क डॉट कॉम के अनुसार कार्य शैली व्यक्ति के लिए एक अनूठी विशेषता कही जा रही है, लोग काम के स्थान पर नयी और कठिन जानकारी को कैसे अवशोषित एवं बनाये रखते हैं उसके तरीके के रूप में अनुवाद कर सकते हैं। इसमें यह भी शामिल कि ये लोग कैसे ध्यान को केन्द्रित, चिंतन और काम के साथ ही साथ समस्याओं को कैसे हल करते हैं। शोधकर्ता के अनुसार कार्यस्थितियों में अध्यापक जिस ढ़ंग से कार्य करता है, उसकी वरीयताएँ कार्य शैली की रचना करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि अध्यापक द्वारा प्रदत्त विभिन्न मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, वातावरणीय, व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं संवेदी आदि तत्वों के प्रति वरीयताओं का कुल योग उसकी कार्य शैली को व्यक्त करता है।

कार्यशैली के विश्लेषण से व्यक्ति को अपनी विशिष्ट कार्य शैली के विषय में सूचनाएँ प्राप्त होती हैं जिससे कार्य का तनाव कम होता है व व्यक्ति की कार्यसन्तुष्टि में सुधार आता है। व्यक्ति को अपने शक्तिशाली पक्षों, नमनीयताओं, ग्राह्यताओं/स्वीकार्यता और अवांछनाओं का पता होने पर उसे विशिष्ट, प्रायोगिक सलाह, स्वयं के विकास के लिए कार्य–योजना एवं व्यक्तिगत परिवेक्षण प्रणाली विकसित करने में मदद मिल सकती हैं। कार्यशैलियों में व्यक्ति की जैविक–शारीरिक संरचना, मस्तिष्क कार्यात्मकता, संवेदी रूपात्मकता, शारीरिक आवश्यकता, वातावरणीय वरीयता, सामाजिक पक्ष, व्यावसायिक अभिवृत्तियों एवं संवेद जैसे शैली अनुबन्धित तत्वों का समावेश होने के कारण सटीक सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं। विद्यालयीन अध्यापक विद्यालय के भीतर एवं बाहर विभिन्न भूमिकाओं (यथा–प्रशासक व प्रबन्धक, निर्देशक व परामर्शक, संगठनकर्ता, अनुदेशक, मूल्यांकनकर्ता, ग्रहणकर्ता, पाठ्यक्रम निर्माता, सामाजिक कार्यकर्ता, वृत्तिक, प्रथमोपचारक आदि) का निर्वहन करता है। कतिपय विवक्त स्थितियों को छोड़कर अध्यापकों के काम करने का ढ़ंग शैक्षिक अभ्यासों और अध्यापक के कार्य निष्पादन को प्रभावित करता है। ऐसी स्थिति में शैक्षिक संस्थानों द्वारा विद्यालयों में अध्यापकों के कार्य के सन्दर्भ में अनुसंधान करने की आवश्यकता है, जिससे अध्यापकों की विविधताओं के अनुरूप प्रभावी कार्य–आव्यूहों की रचना की जा सके। अतः सम्बद्ध साहित्य के पुनरीक्षण को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन अध्यापकों की कार्यशैलियों की पहचान एवं वर्गीकरण करने हेतु किया गया।

1.अवधारणा

प्रस्तुत अध्ययन का आकल्पन अग्रांकित अवधारणा पर किया गया–

प्रत्येक अध्यापक के कार्य करने की विशिष्ट शैली होती है। अध्यापकों की कार्यशैलियों की पहचान और उनका वर्गीकरण किया जा सकता है।

2.अध्ययन विधि

किसी भी क्षेत्र में शोध अध्ययन एक सोद्देश्य क्रिया है। यह किस विधि द्वारा पूर्ण किया जाये, इसका निर्धारण शोध अध्ययन की प्रकृति, उद्देश्य एवं उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करता है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य– अध्यापकों की कार्यशैलियों की पहचान एवं वर्गीकरण करना था। अतः अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए गुणात्मक प्रदत्तों का संकलन एवं प्राप्त प्रदत्तों का गुणात्मक विश्लेषण अपेक्षित एवं वाँछनीय था। अतः गुणात्मक अध्ययन में बुनियादी सिद्धांत अध्ययन की मान्यताओं के अनुरूप अध्ययन उद्देश्य की पूर्ति कार्यशैली से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य के पुनरीक्षण; विषय वस्तु विश्लेषण; विद्यालयीन, कक्षागत एवं विविध संस्थितियों में अध्यापकों के कार्य–व्यवहारों के अवलोकन तथा गहराई से सूचना प्राप्ति व संकलित सूचनाओं की बेहतर समझ हेतु अध्यापकों से साक्षात्कार जैसी प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

3.प्रदत्तों के स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन उद्देश्यों के अनुरूप आवश्यक प्रदत्तों की प्राप्ति के स्रोत इस प्रकार रहे–

1.कार्यशैली से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य

2.सेवारत अध्यापक

4.प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण

उद्देश्य की पूर्ति हेतु तथ्यों या प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। तथ्य संकलन के लिए उपकरणों की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए उद्देश्यों की पूर्ति निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

विषय वस्तु विश्लेषण प्रारूप

असरंचित अवलोकन प्रपत्र

असंरचित साक्षात्कार

5.प्रदत्तों की प्रकृति

इस अध्ययन में प्रयुक्त तीनों प्रविधियों– विषय वस्तु विश्लेषण, असरंचित अवलोकन तथा असंरचित साक्षात्कार से विवरणात्मक (गुणात्मक) प्रकार के प्रदत्त प्राप्त हुए। अतः प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों की प्रकृति

गुणात्मक प्रकार की थी।

6.प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया एवं क्रियाविधि

शोध अध्ययन के लिए संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु अग्रांकित प्रक्रिया एवं क्रियाविधि अपनायी गयी–

- अध्यापकों की कार्यशैली से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य का विषय वस्तु विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन में विषय वस्तु विश्लेषण प्रारूप का विकास अध्ययन विकास के साथ–साथ आवश्यकतानुसार किया गया। इस विश्लेषण द्वारा कार्यशैलियों से सम्बन्धित तत्वों को पृथक्–पृथक् व्यवस्थित किया गया।
- विद्यालयीन, कक्षागत एवं विविध संस्थितियों में अध्यापकों के व्यवहारों का अवलोकन करके दैनन्दिनी में लिपिबद्ध सूचनाओं का विश्लेषण करके कार्यशैली से सम्बन्धित तत्वों को उद्देश्यानुसार पृथक्–पृथक् कर व्यवस्थित किया गया।
- अवलोकन से प्राप्त जानकारी की पूर्णता तथा अधिक गहराई से सूचनाओं की प्राप्ति तथा संकलित सूचनाओं की बेहतर समझ हेतु अध्यापकों से साक्षात्कार का विषय वस्तु विश्लेषण करके कार्यशैली से सम्बन्धित तत्वों को उद्देश्यानुसार व्यवस्थित किया गया।
- अध्ययन–उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सम्बन्धित साहित्य, अवलोकन तथा साक्षात्कार से प्राप्त गुणात्मक प्रदत्तों को समन्वित करते हुए विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए प्रदत विश्लेषण की गुणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया।

7.प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

7.1 .अध्यापक कार्यशैली के उपलब्ध विविध वर्गीकरणों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

कार्यशैली सम्प्रत्यय को अनुसंधानकर्ताओं, मनौवैज्ञानिकों व शिक्षाशास्त्रियों ने विभिन्न प्रकार से प्रत्यक्षीकृत किया है–

वर्र एवं कोंनेर (1992) ने कार्य शैली को दो भागों में वर्गीकरण किया–

(i)बौद्धिक कार्य शैली एवं
(ii)गैर बौद्धिक कार्य शैली

प्रवेश–स्तर के प्रशिक्षण के दौरान कार्य शैली का प्रभावी मापन का विकास करने के क्रम में इन्होंने बौद्धिक कार्य शैली को मुख्यतः संज्ञान के प्रति संज्ञान की (meta-cognitive) प्रक्रियाओं के संदर्भ में देखते हुए और गैर बौद्धिक कार्य शैली को गतिविधि उन्मुखता, सामाजिक कार्य निर्वाह–क्षमता और आत्मविश्वास (proactivity, social competence and self-confidence) के संदर्भ में वर्गीकृत किया।

मेरील एवं रीड (1999) ने प्रभावी प्रदर्शन के लिए व्यक्तिगत शैलियों का उल्लेख किया–
(i)विश्लेषणात्मक (Analytical)
(ii)चालक (Driver)
(iii)मनभावन (Amiable)
(iv)अर्थपूर्ण (Expressive)

मेरील एवं रीड द्वारा प्रस्तुत उक्त वर्गीकरण में व्यक्त कार्य शैलियों में जहाँ विश्लेषणात्मक शैली को शामिल किया गया है वहीं अर्थपूर्ण शैली से पूर्णात्मक शैली का चालक शैली से अभिप्रेरण केन्द्रितता व अभिप्रेरण गैर केन्द्रितता, वातावरण उन्मुखता एवं वातावरण गैर उन्मुखता का मनभावन शैली से कार्य करने वाले के क्षेत्र स्वतंत्रता या क्षेत्र आधारितता, लघु सातत्य प्रधान या दीर्घ सातत्य प्रधानता, नमनीयता या अनमनीयता प्रधान कार्य पद्धति को वरीयता देने का संकेत मिलता है।

शैली प्रिवोस्ट ने व्यक्तित्व परीक्षण के लम्बे अनुभव के आधार पर कुल चार कार्यशैलियों का विवरण प्रस्तुत किया है–

(i)अवकलन (Doing)
(ii)अग्रसरण (Leading)
(iii)अनुरागशील (Loving)
(iv)अधिगम (Learning)

शैली प्रिवोस्ट ने अवकलन, अग्रसरण, अनुरागशील एवं अधिगम का कार्यशैलियों के रूप में वर्गीकरण किया है। अवकलन व अनुरागशील कार्य शैलियों से कार्यकर्ता के क्षेत्र स्वतंत्र या आधारित, लघु या दीर्घ सातत्य प्रधान्य, होने का संकेत मिलता है। अग्रसरण शैली से मुख्यतः उसके अभिप्रेरणा केन्द्रित व अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वैयक्तिक व सामूहिक क्रियाकलापों में सहभागिता लेने वाला होने का संकेत मिलता है। अधिगम को स्वतंत्र रूप से कार्यशैली के रूप में वर्गीकृत करने से स्पष्ट है कि अधिगम कार्य है और कार्य अधिगम।

स्किलपाथ ने कार्यकर्ताओं को उनकी कार्यशैलियों के आधार पर चार वर्गों में वर्गीकृत किया है–

(i)केन्द्रणकर्ता (Focuser)
(ii)संक्रियक (Operators)
(iii)समाकलक (Integrators)
(iv)वर्णनकर्ता (Relaters)

स्किलपाथ द्वारा व्यक्त कार्य शैलियों में जहाँ वर्णनकर्ता विश्लेषणात्मक व केन्द्रणकर्ता एवं समाकलक से संश्लेषणात्मक पद्धति का संकेत मिलता है। केन्द्रणकर्ता संक्रियक, समाकलक और वर्णनकर्ता में क्षेत्र स्वतंत्रता व क्षेत्र आधारितता, लघु सातत्य प्रधानता व दीर्घ सातत्य प्रधानता, नमनीयता व अनमनीयता, अभिप्रेरण केन्द्रितता व अभिप्रेरण गैर केन्द्रितता, वातावरण उन्मुखता एवं वातावरण गैर उन्मुखता, वैयक्तिकता व गैर वैयक्तिकता तथा दृश्य प्रधानता व श्रवण प्रधानता के तत्व शामिल हैं।

मैकइन्टायर ने छः द्वि–ध्रुवीय कार्य शैलियों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है–

(i)निर्माता बनाम परानुभूतिकर्ता (Producers vs Empathizers)
(ii)दूरदर्शी बनाम कार्यान्वयनकर्ता (Visionaries vs Implementers)
(iii)नियोजनकर्ता बनाम अग्रेषक (Planners vs Movers)
(iv)नियंत्रक बनाम स्वतंत्र (Controllers vs Independents)
(v)संगठक बनाम अनुकूलनकर्ता (Organizers Vs Adapters)
(vi)नवाचारकर्ता बनाम परम्परावादी (Innovators Vs Traditionalists)

मैकइन्टायर द्वारा व्यक्त कार्य शैलियों में जहाँ निर्माता, दूरदर्शी, नियोजनकर्ता, स्वतंत्र एवं नवाचारकर्ता के लिए विश्लेषण की प्रभावी क्षमता का होना जरूरी है। वहीं परानुभूतिकर्ता एवं दूरदर्शी में पूर्णात्मक चिंतन, अग्रेषक में अभिप्रेरणा केन्द्रितता; नवाचारकर्ता में क्षेत्र स्वतंत्रता; परम्परावादी, अनुकूलनकर्ता एवं कार्यान्वयनकर्ता में अध्यापक के क्षेत्र आधारित एवं उत्तरदायित्वपूर्ण होने का प्रतिबिम्बन मिलता है।

बेलबिन्स (1993) ने अपने अध्ययन के आधार पर छः प्रकार के कार्यकर्ताओं का उल्लेख किया–

(i)चिन्तक (Thinker)
(ii)कर्ता (The Doer)
(iii)दलकर्मी (The Team worker)
(iv)संगठक (Organizer)
(v)मूल्यांकनकर्ता (The Evaluator)
(vi)जाँचकर्ता (The Checker)

बेलबिन्स द्वारा व्यक्त कार्य शैलियों में मूल्यांकनकर्ता, जाँचकर्ता एवं चिन्तक कार्यकर्ताओं की कार्यशैली में विश्लेषणात्मक व पूर्णात्मक कार्यशैली का संकेत मिलता है। कर्ता, दलकर्मी और संगठक कार्यकर्ताओं की कार्यशैली में क्षेत्र स्वतंत्रता व क्षेत्र आधारितता, लघु सातत्य प्रधानता व दीर्घ सातत्य प्रधानता, नमनीयता व अनमनीयता, अभिप्रेरण केन्द्रितता व अभिप्रेरण गैर केन्द्रितता, वातावरण उन्मुखता एवं वातावरण गैर उन्मुखता, वैयक्तिकता व गैर वैयक्तिकता तथा दृश्य प्रधानता व श्रवण प्रधानता के तत्वों का प्रतिबिम्बन है

मेयर्स–ब्रिग्स (1977) ने व्यक्तित्व प्रकार के आधार पर चार द्वि–ध्रुवीय कार्यशैलियों का वर्गीकरण किया–
(i)बहिर्मुखी बनाम अन्तर्मुखी (Extraverson Vs. Introverson)
(ii)निर्णयन बनाम प्रत्यक्षीकरण (Judging Vs. Perceiving)
(iii)चिन्तनशील बनाम स्पर्शज्ञान (Thinking Vs. Feeling)
(iv)संवेदन बनाम अन्तर्प्रज्ञा (Sensing Vs. Intuition)

अन्तर्मुखीपन, अन्तर्प्रज्ञा, निर्णयन एवं स्पर्शज्ञान के लिए जहाँ पूर्णात्मक चिंतन प्रधान होता है वहीं स्वतंत्र चिन्तन एवं प्रत्यक्षीकरण के लिए विश्लेषणात्मकता की प्रधानता होती है।

अग्रवाल (1987) ने व्यक्ति के अधिगम की शैली को अग्रांकित सात द्विध्रुवीय रूपों में वर्गीकृत किया है–
(i)क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित अधिगम शैली
(ii)लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान अधिगम शैली
(iii)दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक अधिगम शैली
(iv)नमनीय बनाम अनमनीय अधिगम शैली
(v)अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित अधिगम शैली
(vi)वातावरण उन्मुख बनाम वातावरण गैर उन्मुख अधिगम शैली
(vii)वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक अधिगम शैली

डन एवं प्रेशनिग ने कार्य शैली विश्लेषण में व्यक्ति के जैव–शारीरिक स्वरूप एवं मस्तिष्क कार्यात्मकता सहित संवेदी रूपात्मकताएँ, भौतिक आवश्यकताएँ, वातावरणीय वरीयताएँ, सामाजिक आयामों तथा व्यावसायिक अभिवृत्तियों के अनुबन्धित शैली तत्वों को सम्मिलित किया जा सकता है। इन तत्वों के विश्लेषण से कार्य शैली के सम्प्रत्यय को समझने में सहायता मिलती है।

7.2कार्य व्यवहार में अवलोकन एवं साक्षात्कार से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष
(अ) मस्तिष्क कार्यात्मकता अथवा प्रभुत्व

प्रत्येक व्यक्ति–मस्तिष्क के मूल रूप से दो भाग हैं। जब व्यक्ति चिन्तन और अधिगम करता है, तब वह मस्तिष्क के किसी न किसी भाग से सम्बद्ध होता है। मस्तिष्क कार्यात्मकता अथवा प्रभुत्व के कारण अध्यापक के कार्य व्यवहार में अग्रांकित विशेषताएँ सामने आती हैं–

मस्तिष्क कार्यात्मकता अथवा प्रभुत्व के आधार पर अध्यापक दो प्रकार के होते हैं। पहले वे जिनका बायाँ मस्तिष्क प्रभावी होता है और दूसरे वे जिनका दायाँ भाग प्रभावी होता है। ऐसे अध्यापक जिनके मस्तिष्क का बायाँ भाग ज्यादा प्रबल होता है, वे तर्क संगत चरणबद्ध सूचनाओं को वरीयता देते हैं और वे विस्तृत सूचनाओं पर अधिक ध्यान देते हैं तथा नई सूचनाओं को लेते या ग्रहण करते समय ज्यादा व्यवस्थित होते हैं। बायाँ मस्तिष्क प्रधान अध्यापक वातावरण के एक अंश पर दृष्टि केन्द्रण करते हैं। इनमें लक्ष्य उन्मुखता अधिक होती है। ये कार्य वातावरण से सम्बन्धित आकांक्षाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर पाते हैं। मस्तिष्क क्रिया कलाप के फलस्वरूप अधिक तर्क संगत चरणबद्ध सूचनाओं को वरीयता देते हैं। सूचना ग्रहण अथवा प्रदान करते वक्त पूरी प्रक्रिया को चरणबद्ध ढ़ंग से लेते हैं व अधिक व्यवस्थित होते हैं।

वे अध्यापक जिनके मस्तिष्क का दाहिना भाग ज्यादा प्रबल होता है, वे सम्पूर्ण पर ज्यादा ध्यान देते हैं। नई बातों को सुनते समय या चीजों को देखते समय ये विस्तृत जानकारी में रुचि नहीं रखते हैं और न ही एक सूचना प्रक्रिया पर ध्यान देते हैं। ये वातावरण को समग्र इकाई के रूप में देखते हैं। सामाजिक स्थितियों में जहाँ संवेदनशीलता, अन्तर्ज्ञान कुशलता की आवश्यकता होती है, वहाँ उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। किसी स्थिति के बारे में सामान्य धारणा निर्मित करने की उनकी योग्यता उन्हें जटिल परिस्थितियों / समस्याओं का समाधान करने की शक्ति देती है। एक साथ बड़े पैमाने पर विकसित गतिविधियों के आधार पर एक सही प्रतिक्रिया दे पाते हैं।

मस्तिष्क कार्यात्मकता अथवा प्रभुत्व के अध्येताओं के अनुसार मस्तिष्क का प्रभुत्व सूचनाओं के ग्रहण, संकलन, प्रसंस्करण आदि के प्रति व्यक्ति की वरीयताओं पर प्रभाव डालता है। हरमन ने मस्तिष्क के चार भागों अथवा चतुर्थांशों ;नंकतंदजेद्ध को सूचीबद्ध किया। मस्तिष्क के भागों के आधार पर व्यक्ति की चिन्तन करने की शैली चार भागों– (अ) तार्किक स्व (उच्च अथवा सेरेबल बायाँ मस्तिष्क) (ब) सुरक्षा संधारण स्व (निम्न अथवा लिम्बिक बायाँ मस्तिष्क) (स) अनुभूति स्व (निम्न अथवा लिम्बिक दायॉ मस्तिष्क) एवं (द) परीक्षणात्मक स्व (उच्च अथवा सेरेबल दायाँ मस्तिष्क) में बाँटा। इन्होंने बताया कि एक व्यक्ति मुख्यतः एक से अधिक शैली का उपयोग करता है। वास्तव में अधिकांश व्यक्ति कम से कम दो चतुर्थांश रखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी मुख्य वरीयताओं (मस्तिष्क के किसी भाग) का आसानी एवं आनन्द से उपयोग कर पाते हैं। गौण वरीयताएँ (मस्तिष्क के वे भाग जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर उपयोग में लाया जाता है) और क्षेत्रीय वरीयताएँ (वे क्षेत्र जिनमें व्यक्ति को मुश्किल होती है या जहाँ तक कि उनसे परे रखना होता है) कठिनता से व्यवहार में आ पाती हैं।

जिन अध्यापकों का बायाँ मस्तिष्क प्रभावी होता है वे तर्क संगत चरणबद्ध सूचनाओं को वरीयता देते हैं और वे विस्तृत सूचनाओं पर अधिक ध्यान देते हैं तथा नई सूचनाओं को लेते या ग्रहण करते समय ज्यादा व्यवस्थित होते हैं अथवा उनको अधिक सिलसिलेवार लेते हैं। वे अधिक तार्किक एवं सुरक्षा संधारण के प्रति सक्रिय होते हैं। अपनी समझ का विस्तार करने के लिए विश्लेषण एवं विस्तृत विचार श्रंखला का उपयोग करते हैं। उन्हें विचार प्रधान ;तमसिमबजपअमद्ध अथवा विश्लेषणात्मक चिन्तक भी कहा जाता है।

जबकि दूसरे अध्यापक जिनके मस्तिष्क का दायाँ भाग अधिक प्रभावी होता है वे सम्पूर्ण पर ज्यादा ध्यान देते हैं। नई बातों को सुनते समय या चीजों को देखते समय ये विस्तृत जानकारी में रुचि नहीं रखते हैं और न ही एक सूचना प्रक्रिया पर ध्यान देते हैं। वे विविध स्रोतों/संदर्भों से प्राप्त सूचनाओं के ग्रहण, संकलन, प्रसंस्करण आदि में अनुभूति एवं मूल्य निर्धारण को वरीयता देते हैं। पूर्णात्मक शैली वाले अध्यापक सामाजिक स्थितियों में जहाँ संवेदनशीलता, अन्तर्ज्ञान कुशलता की आवश्यकता होती है, वहाँ उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। किसी स्थिति के बारे में सामान्य धारणा निर्मित करने की उनकी योग्यता जटिल परिस्थितियों/समस्याओं का सूक्ष्म सवालों के आधार पर समाधान करने की योग्यता से युक्त होते हैं। कम्प्यूटर की भाषा में एक ऐसे अध्यापक को समानान्तर प्रोसेसर (च्तंससमस च्तवबमेवत) के रूप में माना जा सकता है। एक साथ बड़े पैमाने पर विकसित गतिविधियों के आधार पर एक सही प्रतिक्रिया दे पाते हैं। ऐसे अध्यापकों को प्रवर्तक ;प्उचनसेपअमद्ध, समग्रतावादी या पूर्णात्मक कहा जाता है।

(आ) सामाजिक वरीयताएँ

शैली साहित्य में सामाजिक पक्ष के अन्तर्गत अध्यापक की प्राधिकार, दल, साथी समूह, युग्म तथा अकेले कार्य करने के प्रति वरीयताओं का विवरण इस प्रकार है–

कुछ अध्यापक प्राधिकार को स्वीकार करते हैं और उन्हें इसके द्वारा नियमित पृष्ठपोषण की आवश्यकता होती है। जबकि दूसरों को प्राधिकारी शक्ति की उपस्थिति अच्छी नहीं लगती है और फलतः उन्हें किसी के निरीक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। जहाँ कुछ अध्यापक दल के रूप में कार्य करना पसन्द करते हैं तथा कई बार नेता के रूप में वे समूह के साथ कार्य बड़ी आसानी से करते हैं। वहीं कुछ अध्यापक अपने विचारों और कार्यों को उन्हीं अध्यापकों के साथ बाँटना या करना पसन्द करते हैं जो उनके समान ही मानसिक एवं बौद्धिक स्तर व समान पद स्तर के हों। कुछ अध्यापक कार्य करते समय अपने साथ एक विशिष्ट दूसरा साथी पसन्द करते हैं। कुछ अध्यापक उन्हें अकेला छोड़े जाने पर अधिक अच्छी तरह से व एकाग्रचित होकर कार्य करते हैं। किसी अन्य के साथ होने पर असहजता महसूस करते हैं।

कुछ अध्यापक प्राधिकार को स्वीकार करते हैं और उन्हें अधिकृत प्राधिकारियों के नियमित पृष्ठपोषण की आवश्यकता होती है। जबकि दूसरों के लिए किसी भी प्राधिकारी शक्ति की आवश्यकता नहीं होती है। न ही दृढ़ नियंत्रण में कार्य करना इन्हें रोचता है। इसलिए प्राधिकारियों के नियमित उपस्थिति इनके कार्य प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। कुछ अध्यापक एक दल के रूप में कार्य करना पसन्द करते हैं। चाहे यह कार्य उन्हें कभी–कभी नेता के रूप में तो कभी दल के सदस्य के रूप में क्यों न करना पड़े। अकेले काम करने की तुलना में दल में कार्य करने से इनकी कार्य कुशलता में वृद्धि होती है।

कुछ अध्यापक अपने विचारों और कार्यों को उन्हीं अध्यापकों के साथ बाँटना या करना पसन्द करते हैं जो उनके ही समान मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के हों। कार्यस्थल पर साथी समूह की उपस्थिति इन्हें ऊर्जावान बनाये रखती है। कुछ अध्यापक कार्य करते समय अपने साथ एक विशेष दूसरा साथी पसन्द करते हैं। इस दूसरे साथी की उपस्थिति उन्हें ऊर्जावान बनाये रखती है। यदि वह विशेष साथी न मिले या किसी अन्य साथी के साथ

कार्य करना जरूरी हो जाये तब ये कार्य न करना, पूर्ण शक्ति, श्रम एवं निष्ठा से न करना भी चुन सकते हैं।

कुछ अध्यापक कार्य करते समय अत्यधिक आत्म केन्द्रित होते हैं। इन्हें केवल अपनी क्षमताओं पर अधिक विश्वास होता है। उन्हें अकेला छोड़े जाने पर अधिक अच्छी तरह से व एकाग्रचित होकर कार्य करते हैं। किसी अन्य के साथ कार्य करने का अवसर आ जाने पर ये असहजता महसूस करते हैं। सामूहिक कार्य में भी अपनी भूमिका के प्रति संवेदनशील होते हैं तथा भूमिका का स्पष्ट परिभाषीकरण चाहते हैं। इनके अनुसार समूह की कमियाँ / विविधताएँ कार्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

अध्यापक दूसरों के साथ किस सहजता, किस स्थिति एवं स्वरूप में बिना परेशानी के काम कर पाता है, वह दूसरों को कैसे एवं किस सीमा तक स्वीकार करता है इत्यादि विचार यह सामाजिक पक्ष के अन्तर्गत आते हैं। इसमें प्राधिकार को स्वीकारना, दल में कार्य करना, अपने साथी समूह के साथ कार्य करना, अध्यापक विशेष के साथ युग्म बनाना या फिर अकेले कार्य करना आदि स्थितियाँ शामिल होती हैं।

(इ) व्यावसायिक अभिवृत्तियाँ

अध्यापक की अभिप्रेरणा, सातत्यता, अनुरूपता उत्तरदायित्व की भावना, संरचना अथवा विन्यास तथा असमरूपता या विविधता के प्रति वरीयताओं से उसकी व्यावसायिक अभिवृत्तियों का पता लगाया जा सकता है। अध्यापक के कार्य व्यवहार में उसकी व्यावसायिक अभिवृत्ति के अग्रांकित तत्व परिलक्षित होते हैं–

कुछ अध्यापक अपने कार्यों को स्वेच्छा से आरम्भ करते हैं एवं उच्च उपलब्धियों को प्राप्त कर अपने कार्य का आनन्द लेते हैं। ये अध्यापक स्व–प्रेरित होते हैं। जबकि कुछ अध्यापकों में अभिप्रेरणा की कमी पायी जाती है और अभिप्रेरणा की न्यूनता उनमें आसानी से देखी जा सकती है। ये अध्यापक अपने कार्य के लिए प्रेरणा देने वाले प्रोत्साहक या मानदेय (incentive) को वरीयता देते हैं। कुछ अध्यापक जिस कार्य को प्रारम्भ करते हैं, उसे पूरा करके ही दम लेते हैं अथवा राहत महसूस करते हैं, जबकि कुछ अध्यापक कार्य के बीच में ही रूचि लेना कम कर देते हैं; कार्य को करना बन्द कर देते हैं; बहुधा अपने कार्य में वे विराम की आवश्यकता महसूस करते हैं और कार्य को पूरा करने के लिए इन्हें अत्यधिक प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। कुछ अध्यापक कार्य करते समय नियम–उपनियमों का ध्यान रखना पसन्द करते हैं और हमेशा वही करते हैं जो नियमानुसार सही हैं, जबकि दूसरे अध्यापक अपने स्वयं के नियमों का पालन करते हैं और गैर पारम्परिक ढ़ंग से अपने कार्यों को सम्पन्न करते हैं व प्रायः ये कार्य धारा के विपरीत कार्य करते हैं।

वे अध्यापक जो दायित्व को स्वीकार करते हैं, कार्य को सम्पन्न करना अपना कर्तव्य मानते हैं, वे आशानुरूप ही कार्यों को पूरा करते हैं। ऐसे अध्यापक अपने क्रियाकलापों के परिणामों पर बड़ी सावधानी से विचार करते हैं। कुछ अध्यापक ऐसे होते हैं जो अपने जीवन में दायित्वों अथवा कार्यों को अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं मानते हैं। ऐसे अध्यापकों को आसानी से कर्त्तव्यच्युत किया जा सकता है। ऐसे अध्यापक प्रायः उन कार्यों या दायित्वों को भूल जाते हैं जिनका उन्होंने वायदा किया था। कुछ अध्यापक एक स्पष्ट मार्गदर्शन रेखा और ढ़ाँचें के अन्तर्गत कार्य करना पसन्द करते हैं, जबकि दूसरे बिना किसी निर्देशों के स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य करना चाहते हैं। कुछ अध्यापक चुनौतियों, विभिन्न प्रकार के (किस्मों) कार्यों और कार्य में परिवर्तन को पसन्द करते हैं। यदि वही कार्य उन्हें दुबारा करना पड़े, तब भी वे दूसरी युक्ति का प्रयोग करना पसन्द करते हैं, जबकि अन्य अध्यापक नियमित कार्यक्रम के अन्तर्गत अच्छा करते हैं। वे अपने कार्य में निरन्तरता को अधिक पसन्द करते हैं।

कुछ अध्यापक अपने कार्यों को स्वेच्छा से आरम्भ करते हैं एवं उच्च उपलब्धियों को प्राप्त करते हैं। ऐसे अध्यापक अपने कार्य का आनन्द लेते हैं। ये अध्यापक स्व–प्रेरित होते हैं। जबकि कुछ अध्यापकों में अभिप्रेरणा की कमी पायी जाती है और अभिप्रेरणा की न्यूनता उनमें आसानी से देखी जा सकती है। ये अध्यापक अपने कार्य के लिए प्रेरणा देने वाले प्रोत्साहक या मानदेय को वरीयता देते हैं। कुछ अध्यापक जिस कार्य को प्रारम्भ करते हैं, उसे पूरा करके ही दम लेते हैं अथवा कार्य पूरा होने पर ही राहत महसूस करते हैं, जबकि कुछ अध्यापक कार्य के बीच में ही रुचि लेना कम कर देते हैं; कार्य को करना बन्द कर देते हैं; बहुधा अपने कार्य में वे विराम की आवश्यकता महसूस करते हैं और कार्य को पूरा करने के लिए इन्हें अत्यधिक प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है।

कुछ अध्यापक कार्य करते समय नियम प्रतिनियमों का ध्यान रखना पसन्द करते हैं और हमेशा वही करते हैं जो नियमानुसार सही हैं, जबकि दूसरे अध्यापक अपने स्वयं के नियमों का पालन करते हैं और गैर पारम्परिक ढ़ंग से अपने कार्यों को सम्पन्न करते हैं। ये प्रायः कार्य धारा के विपरीत कार्य करने को वरीयता देते हैं। कुछ अध्यापक स्वेच्छा से दायित्व को स्वीकार करते हैं। कार्य को सम्पन्न करना अपना कर्तव्य मानते हैं। उनसे अपेक्षित कार्यों को आशानुरूप पूरा करते हैं। ऐसे अध्यापक अपने क्रियाकलापों के परिणामों पर बड़ी सावधानी से विचार करते हैं। जबकि कुछ अध्यापक ऐसे भी होते हैं जो अपने जीवन में दायित्वों अथवा कार्यों को

अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं मानते हैं। ऐसे अध्यापकों को आसानी से कर्त्तव्यच्युत किया जा सकता है। ऐसे लोग प्रायः उन कार्यों या दायित्वों को भूल जाते हैं, जिनको सम्पन्न करने का उन्होंने वायदा किया था।

कुछ अध्यापक एक स्पष्ट मार्गदर्शन रेखा और ढ़ाँचें के अन्तर्गत कार्य करना पसन्द करते हैं। ये अपने लिए स्पष्ट मार्गदर्शन, रूपरेखा और ढ़ाँचें के अन्तर्गत कार्य करना सुरक्षित एवं सुविधाजनक मानते हैं, जबकि दूसरे बिना किसी मार्गदर्शन, रूपरेखा और ढ़ाँचें के अन्तर्गत स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य करना चाहते हैं। इनकी नज़र में मार्गदर्शन, रूपरेखा और ढ़ाँचें के अन्तर्गत कार्य करना मौलिकता एवं नवीनता में बाधक है। कुछ लोग चुनौतियों, विभिन्न प्रकार के (किस्मों) कार्यों और कार्य में परिवर्तन को पसन्द करते हैं। यदि वही कार्य दुबारा भी करना पड़े तो भी वे दूसरी युक्ति का प्रयोग करना पसन्द करते हैं, जबकि अन्य अध्यापक नियमित कार्यक्रम के अन्तर्गत अच्छा करते हैं। वे अपने कार्य में निरन्तरता को पसन्द करते हैं। अध्यापक की व्यावसायिक अभिवृत्तियों के उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक अभिवृत्ति सम्बन्धी ये तत्व अध्यापक को व्यावसायिक रूप से सफल या असफल बनाने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

(ई) संवेदी रूपात्मकताएँ

संवेदी रूपात्मकताओं से तात्पर्य अध्यापक के ऐन्द्रिक संकाय से है। इसमें श्रवण, दृष्टि, स्पर्श ग्राह्य एवं गतिबोधक/भागग्रहण को दी जाने वाली वरीयताएँ शामिल होती हैं। अध्यापक में ऐन्द्रिक संकायगत अग्रांकित प्रमुख विशेषताएँ पायी जाती हैं–

कुछ लोग मुख्यतः सुनी गई सूचनाओं को याद रख पाते हैं, वे अच्छे श्रोता होते हैं। कुछ लोग अधिकांश उन चीजों को याद रख पाते हैं, जिनको वे देखते या पढ़ते हैं। जहाँ कुछ लोग वस्तुओं का चतुराई से प्रबन्ध करने की प्रबल इच्छा रखते हुए अपने हाथों का उपयोग करते हैं। वहीं कुछ लोग विभिन्न कार्यों या परियोजनाओं में शारीरिक रूप से अत्यधिक सक्रिय होकर सहभागी होते हैं और स्वयं के अनुभवों के आधार पर अधिक अच्छी तरह से कार्य कर पाते हैं।

कुछ अध्यापक श्रवण प्राबल्य के फलस्वरूप सुनी गई सूचनाओं को याद रखते हैं, वे अच्छे श्रोता होते हैं। ऐसे अध्यापक मौखिक निर्देशों को ज्यादा पसन्द करते हैं। सुनी हुई सूचनाओं को याद रखना एवं सम्प्रेषित करना इनके लिए सहज होता है। मौखिक निर्देशों को ज्यादा वरीयता देते हैं और नवीन जानकारियों के आदान–प्रदान के लिए विचार–विमर्श करने को अधिक वरीयता देते हैं। प्रायः इनमें अमूर्त चिन्तन की क्षमता तुलनात्मक रूप से अधिक होती है।

चक्षुष प्राबल्य के फलस्वरूप कुछ अध्यापक अधिकांश उन चीजों को याद रखते हैं, जिनको वे पढ़ते हैं तथा लिखित निर्देशों या सामग्री को वरीयता देते हैं। कुछ अध्यापक तस्वीरों या अन्य चित्रों को देखकर अच्छा याद रख पाते हैं, वे चीजों तथा कार्यों को बेहतर ढ़ंग से समझ पाते हैं। ये अध्यापक अपनी कल्पना का बेहतर उपयोग करते हैं। ये कार्य स्थितियों में पढ़ी जा सकने वाली सूचनाओं को महत्व देते हैं। लिखित निर्देशों का अनुपालन करना इनके लिए सहज होता है। तस्वीरों या चित्रों या मुद्रित सामग्री को देख कर या प्रयुक्त करने से स्वयं को बेहतर ढ़ंग से व्यक्त कर पाते हैं। दृश्य सामग्री इनकी कल्पना को निर्देशन देती है। कक्षा में दृश्य सामग्री के उपयोग को वरीयता देते हैं। ये प्रायः अमूर्त की तुलना में मूर्त चिन्तन करते समय सहजता का अनुभव करते हैं।

स्पर्श को पाँच परंपरागत इंद्रियों में से एक माना जाता है। स्पर्श की छाप दबाव, त्वचा खिंचाव, कंपन और तापमान सहित कई तौर तरीकों से बनती है। स्पर्श ग्राह्य होने के कारण कुछ अध्यापक वस्तुओं का चतुराई से प्रबन्ध करने की प्रबल इच्छा रखते हैं और ध्यान को एकाग्र रखते हैं और ध्यान एकाग्र करते समय अथवा सुनते समय अपने हाथों का उपयोग करते हैं। जो कार्य ये अपने हाथों से कर लेते हैं उन्हें आसानी से दोहरा पाते हैं। अपने हाथों से कार्य करने पर इन्हें अधिक संतुष्टि प्राप्त होती है।

गतिबोधकता और भागग्रहणशीलता के कारण कुछ अध्यापक विभिन्न कार्यों या परियोजनाओं में शारीरिक रूप से अत्यधिक सक्रिय होकर सहभागी होते हैं और स्वयं के अनुभवों के आधार पर अधिक अच्छी तरह से याद रख पाते हैं। ऐसे अध्यापक समझने, याद रखने कार्य करने के लिए महसूस करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। सीखने की शैली के सिद्धांतों के अनुसार भागग्रही अध्यापक कार्य करके अनुभूति करते हैं। अनुभवों की प्राप्ति के लिए सहभागिता लेते हैं। केवल पढ़ने या सुनने से सीखने में कठिनाई महसूस करते हैं। एक ही समय में दो अलग–अलग चीजों पर ध्यान केन्द्रित करना इनके लिए एक सामान्य बात होती है। वे अच्छे आँख– हाथ समन्वयन के अधिकारी होते हैं तथा कार्य के लिए अपने शरीर का अधिकाधिक उपयोग करते हैं।

(उ)शारीरिक आवश्यकताएँ

अध्यापक की अपनी शारीरिक आवश्यकताएँ उसके कार्य–व्यवहार एवं आदतों को विशेष रूप से प्रभावित करती हैं। इनके फलस्वरूप उसका व्यवहार निर्देशित एवं नियंत्रित होता है। इनमें कतिपय प्रमुख शारीरिक आवश्यकताएँ इस प्रकार हैं–

कुछ अध्यापकों के लिए बिल्कुल एक जैसी स्थिति में बैठे रहना कठिन होता है, इधर–उधर विचरण करना उनकी आवश्यकता होती है। विशेष रूप से यह स्थिति तब होती है जब वे कार्य या गम्भीर विचार कर रहे होते हैं। जबकि दूसरे अध्यापक मुश्किल कार्य करते समय खड़े होने के बजाय बैठे रहने को ही वरीयता देते हैं। गम्भीर कार्य करते समय या कुछ बड़ा कार्य करते समय कुछ अध्यापक खाते अथवा पीते हैं। जबकि दूसरे कठिन कार्य करते समय कुछ चबाना, खाना या पीने को ध्यान भंग होना मानते हैं। अलग–अलग व्यक्तियों के लिए अलग–अलग महत्त्वपूर्ण समय होता है। इस समयानुसार ही उनका मस्तिष्क कार्य करने के लिए अधिक सक्रिय होता है और वे इसी समय आसानी से विचार करने के लिए एकाग्रचित हो पाते हैं। कुछ के लिए यह प्रातः जल्दी ही अथवा देर से, कुछ के लिए दोपहर बाद एवं अन्य के लिए शाम को कार्य करना सुगम होता है।

कुछ अध्यापकों के लिए यथावत बैठे रहना बड़ा मुश्किल होता है, इधर–उधर विचरण करना उनकी आवश्यकता होती है। विशेष रूप से यह स्थिति तब होती है जब वे कार्य या गम्भीर विचार कर रहे होते हैं। जबकि दूसरे अध्यापक मुश्किल कार्य करते समय खड़े होने के बजाय बैठे रहने को ही वरीयता देते हैं। एक जगह पर बैठकर या खड़े होकर कार्य करने को ये कार्य में बड़ी बाधा मानते हैं। ऐसा कार्य जिसमें संचलन करना शामिल हो वहाँ इनका प्रदर्शन बेहतर होता है।

प्रायः यह देखने में आता है कि कुछ अध्यापक गम्भीर कार्य करते समय या कुछ बड़ा कार्य करते समय खाते अथवा पीते हैं। कार्य करते समय खाना अथवा पीना इनकी मान्यता या आदत में शामिल होता है। जबकि दूसरे कठिन कार्य करते समय कुछ भी चबाने, खाने या पीने को ध्यान भंग होना मानते हैं। इनके लिए कार्य करते समय खाना अथवा पीना काम करने में बाधक होता है।

अलग–अलग व्यक्तियों के लिए दिन का अलग–अलग समय महत्त्वपूर्ण होता है। समय विशेष पर इनका मस्तिष्क कार्य करने के लिए अधिक सक्रिय होता है और वे इसी समय आसानी से विचार करने कार्य करने के लिए एकाग्रचित हो पाते हैं। कुछ के लिए यह प्रातः जल्दी ही अथवा देर से, कुछ के लिए दोपहर बाद एवं अन्य के लिए शाम या रात्री के समय कार्य करना सुगम होता है।

(ऊ) वातावरणीय वरीयताएँ

वातावरणीय वरीयताओं में अध्यापक की ध्वनि, प्रकाश, तापमान एवं कार्यक्षेत्र (कार्यस्थल) सम्बन्धी वरीयताएँ शामिल होती हैं। प्रमुख वातावरणीय वरीयताएँ इस प्रकार हैं–

कुछ अध्यापक कठिन समस्याओं पर विचार करते समय खामोशी या बिल्कुल शान्ति को पसन्द करते हैं, जबकि दूसरे कठिन समस्याओं पर विचार करते समय ध्वनि अथवा संगीतमय वातावरण को वरीयता देते हैं। कुछ अध्यापक कार्य करते समय तीव्र प्रकाश को वरीयता देते हैं जबकि दूसरे मन्द प्रकाश की स्थितियों में अधिक अच्छा करते हैं। अत्यधिक प्रकाश उनकी एकाग्रता को भंग करता है। कुछ अध्यापक कार्य करते समय गर्म वातावरण को पसन्द करते हैं, जबकि दूसरे ठण्डे वातावरण में अधिक अच्छा करते हैं। जहाँ कुछ अध्यापक मेज सहित सीधे पृष्ठ वाली कुर्सी आदि को अर्थात् औपचारिक साज–सज्जा को वरीयता देते हैं वहीं कुछ अध्यापकों के लिए आराम दायक कुर्सी (lounge chairs) अथवा फर्श पर लेटे रहना उपयुक्त रहता है अर्थात् ये गैर औपचारिक वातावरण को वरीयता देते हैं।

कुछ अध्यापक कठिन समस्याओं पर विचार करते समय पूर्ण खामोशी या बिल्कुल शान्ति (pin drop silence) को पसन्द करते हैं। जरा सा भी शोरगुल इनके कार्य निष्पादन को प्रभावित करता है। जबकि कुछ अध्यापक कठिन समस्याओं पर विचार करते समय ध्वनि, हल्की–हल्की बातचीत अथवा संगीतमय वातावरण को वरीयता देते हैं।

कुछ अध्यापक कार्य करते समय तीव्र प्रकाश को वरीयता देते हैं जबकि दूसरे मन्द प्रकाश की स्थितियों में अधिक अच्छा करते हैं। किसी के लिए अत्यधिक तथा किसी के लिए प्रकाश का मन्द होना उनकी काम में एकाग्रता को भंग करता है। वांछित या विशेष प्रकार की प्रकाश व्यवस्था इन्हें एकाग्रता बनाने में सहायता देती है। वहीं ऐसे अध्यापक भी हैं जिनके लिए विशेष प्रकार की प्रकाश की व्यवस्था जरूरी नहीं है।

कुछ अध्यापक कार्य करते समय गर्म वातावरण को पसन्द करते हैं, जबकि दूसरे ठण्डे वातावरण में अधिक अच्छा करते हैं। तापमान की स्थिति के सम्बन्ध में स्पष्ट वरीयता होने पर विपरीत वातावरण में कार्य करना

कठिन होता है। अन्य स्थितियों के अतिरिक्त केवल तापमान के साथ अनुकूलन एक जटिल समस्या रहती है। अन्य अध्यापक तापमान से अप्रभावित या कम प्रभावित होते हैं इसलिए तापमान तत्व से इनका कार्य निष्पादन प्रभावित नहीं होता है।

कार्यस्थल के वातावरण के सम्बन्ध में अध्यापक की व्यक्तिगत मान्यता हो सकती हैं। कई अध्यापक बैठक व्यवस्था, सामग्री एवं सुविधाओं की उपलब्धता आदि के प्रति अधिक संजीदा होते हैं। कार्य करते समय या कठिन समस्याओं पर विचार करते समय इन्हें बिल्कुल अपने अनुकूल विशेष प्रकार के कार्यस्थल की आवश्यकता होती है। जैसे– मेज सहित सीधे पृष्ठ वाली कुर्सी, औपचारिक उपयुक्त आन्तरिक साज–सज्जा, प्रयोज्य सामग्री एवं सुविधाओं की उपलब्धता आदि। जबकि कुछ अध्यापकों के लिए कोई भी आराम दायक कुर्सी अथवा फर्श आदि उपयुक्त रहते हैं। विशेष प्रकार की साज–सज्जा, प्रयोज्य सामग्री एवं सुविधाओं की उपलब्धता के प्रति इनका आग्रह नहीं रहता है। अर्थात् ये कार्यस्थल पर औपचारिक वातावरण को वरीयता नहीं देते हैं। कभी–कभी अध्यापक उपर्युक्त वातावरणीय तत्वों के प्रति इतने दृढ़ हो सकते हैं कि एक भी वातावरणीय तत्व के अनुकूल न होने पर इनका कार्य निष्पादन प्रभावित हो जाता है। कुछ के लिए जो जहाँ, जैसा है वो ठीक है। इनकी सामग्री एवं सुविधाओं की उपलब्धता की प्राप्ति के लिए चेष्टा या सक्रियता कम होती है। ये कार्यस्थल के वातावरण से अप्रभावित या कम प्रभावित होकर कार्य जारी रख सकते हैं।

सीखना एक सतत् एवं सायासिक प्रक्रिया है। सभी प्रकार के सीखने में चार मुख्य सिद्धान्त– अभिप्रेरण, उद्दीपन, अनुक्रिया एवं पुनर्बलन निहित होते हैं। इस दृष्टि से अधिगम एवं कार्य एकार्थक हैं। दूसरे शब्दों में सीखना एक कार्य है और कार्य सीखना है। उपलब्ध उपर्युक्त शैली साहित्य, डन एवं प्रेशनिग के कार्य शैली विश्लेषण तथा अग्रवाल (1987) द्वारा प्रस्तुत सीखने की शैली के वर्गीकरण को दृष्टिगत रखते हुए विविध शैली तथा कार्यशैली साहित्य के अध्ययन के साथ–साथ क्षेत्रगत स्थितियों में अध्यापकों के कार्य व्यवहार के गहन अवलोकन एवं असंरचित साक्षात्कार के आधार पर अध्यापकों की कार्यशैलियों को अग्रांकित कुल नौ द्विध्रुवीय रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

(i)विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक
(ii)उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त
(iii)क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित
(iv)लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान
(v)नमनीय बनाम अनमनीय कार्यशैली
(vi)अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित
(vii)वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष
(viii)वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक
(ix)दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक

8.शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

प्रत्येक अध्यापक की सीखने, चिन्तन करने एवं कार्य करने की अपनी विशिष्ट शैली होती है। हालांकि बहुत ही कम अध्यापक बिल्कुल उस ढंग से कार्य अथवा अधिगम करते हैं, जो उनके लिए श्रेष्ठतम है। कार्य शैली का ज्ञान अध्यापक को अपनी विविधता की शक्ति (power of diversity) को पहचानने का एक अवसर देता है, ताकि वह अपनी कार्यशैलियों के अनुसार अपने कार्य व्यवहार में सुधार लाते हुए अध्यापन व्यवसाय में अधिकतम सफलता प्राप्त कर सके। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त अनुभवों के आधार पर भावी शोध हेतु अग्रांकित सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं–

1.विद्यालयों में अध्यापकों की कार्यशैली के सन्दर्भ में और गहन अनुसंधान करने की आवश्यकता है, जिससे अध्यापकों की विविधताओं को अधिक से अधिक वस्तुनिष्ठ तरीके से समझा जा सके और विविधताओं की नवीन समझ के अनुरूप प्रभावी कार्य–आव्यूहों की रचना की जा सके।
2.अध्यापकों की कार्यशैलियों के विकास में विभिन्न मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, वातावरणीय, व्यावसायिक एवं संवेदी आदि तत्वों की भूमिका अहम होती है। इन तत्वों से सम्बन्धित विविध व्यक्तिगत एवं संस्थागत कारकों यथा– संगठन की प्रकृति, संस्थागत परिवेश, प्रशिक्षण स्तर, सामाजिक– आर्थिक पृष्ठभूमि, बुद्धि, उपलब्धि

अभिप्रेरणा, अध्यापन विषय, संकाय, लिंगगत भिन्नता, क्षेत्रगत भिन्नता, अध्यापन अनुभव, पद स्थिति, प्रशासनिक अनुभव आदि के साथ अध्यापकों की कार्यशैली के सम्बन्ध का अध्ययन किया जाना चाहिए।

3.प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापकों की कार्यशैलियों को नौ द्विध्रुवीय रूपों– विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक तथा दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैली में वर्गीकृत किया गया है। औपचारिक कार्य क्षेत्र के साथ ही साथ अनौपचारिक कार्य स्थितियों में शिक्षकों के व्यवहार का अध्ययन करते हुए इस वर्गीकरण की पुष्टि या आवश्यकतानुसार पुनर्निर्धारण किया जा सकता है।

4.प्रस्तुत अध्ययन में वर्गीकृत अध्यापकों की कार्यशैलियों में विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, नमनीय बनाम अनमनीय, अभिप्रेरण केन्द्रित बनाम अभिप्रेरण गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक तथा दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक कार्यशैली के ध्रुव विशेष की वरीयता रखने वाले अध्यापकों के लिए उपयुक्त कार्य स्थितियों व वातावरण की पहचान करने के लिए गहन एवं विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।

5.सम्बद्ध साहित्य यह संसूचित करता है कि अध्यापकों की कार्यशैलियों का अध्ययन क्षेत्र शैशवावस्था में है। अतः इस सम्प्रत्यय की व्यापक समझ एवं समझ के विस्तार के लिए और अधिक सुनियोजित, व्यवस्थित, गहन एवं विस्तृत अध्ययन करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची

1.अग्रवाल, सुभाषचन्द्र; लर्निंग स्टाइल अमंग क्रियेटिव स्टूडेन्ट्स, इलाहाबाद, सैन्ट्रल पब्लिशिंग हाऊस, 1987.

2.ऑलशेस्की, जेरी एण्ड शेलट, रिचर्ड; रिजनेबल जोब अकेमोडेशन्स फॉर पीपल विद साइकेटेरिक डिसेबिलिटीज इन सोर्श बुक ऑफ रिहेबिलीटेशन एण्ड मेंटल हेल्थ, एडी. डविड पी. मोक्सले एण्ड जॉन आर. फिंच (एडी.), क्लुवर एकेडेमिक / प्लेनम पब्लिशर्स, न्यूयॉर्क, 2003, 66.

3.एडम्स, जुड, क्वालिटी गवर्न्मेंट, बाउल्डर सीओ, इन्टरनेट पेपर 2001; एट http://bama.ua.edu/~jrichard/Team_Skills/ Team_Skills_Instructors_Info/ Assignments/Work_Style _Questionnaire.PDF

4.कीफी, जेम्स डब्ल्यू.; प्रोफाइलिंग एण्ड यूटिलाइजिंग लर्निंग स्टाइल, रेस्टन, वी ए : नेशनल एसोसियशन ऑफ सैकण्डरी स्कूल प्रिंसिपल्स, 1988.

5.डन, आर. एण्ड ग्रिगस, एस.; लर्निंग स्टाइल्स : क्वाइट रिवोल्यूशन इन अमेरिकन सैकण्डरी स्कूल्स, रेस्टन, विरजीनिया, नेशनल एसोसियशन ऑफ सैकण्डरी स्कूल प्रिंसिपल्स, 1988.

6.डन, रीटा एण्ड प्रेशनिग, बारबरा; वर्किंग स्आइल्स एनालसिस, कार्पोरेट वर्जन, एट, www. creativelearningcentre.com

7.डयूवी, रसेल ए.; एट www.psywww.com/intropsych/ index.html

8.निकोलस, रेना ए.; वर्क–स्टाइल मेज़रमेंट : डवलपमेंट एंड वेलिडेशन, डिपार्टमेंट ऑफ मेडिकल एंड क्लीनिकली साइकोलॉजी, यूनिफोर्मड यूनिवर्सिटी ऑफ़ हेल्थ साइंसेज, बेथेस्डा, एमडी, यू.एस.ए., 2002, पपप.

9.प्राट्ट, डी.डी.; गुड टीचिंग : वन साईज फिट ऑल ? न्यू डाइटेक्शन फॉर एडल्ट एण्ड कन्टिन्यूइंग एज्यूकेशन, 2002, 93, 5–15.

10.पिथर्स, आर. टी.; कॉगनीटिव लर्निंग स्टाइलः अ रिव्यू ऑफ दा फील्ड डिपेन्डेण्ट–फील्ड इन्डिपेन्डेण्ट अप्रोच, जर्नल ऑफ वोकेशनल ऐंड्यूकेशन एण्ड ट्रेनिंग, 54 (1), 2002, 117–132.

11.प्रिवोस्ट, शैली; एट http://www.inc.com/shelley-prevost/4-unique-working-styles-whats-yours.html

12.प्रेशनिग, बारबरा; 1994 एट www.creativelearningcenter.com/aboutworkingstyle.html.

13.फाई पी. एस. एण्ड केरोंन, पी. ए.; इफेक्ट्स ऑफ कॉग्नीटिव स्टाइल एण्ड काऊन्सलर, क्लाइंट इम्पेथिबिटी ऑन क्लाइंट ग्रोथ, जर्नल ऑफ काउन्सलिंग साहकोलॉजी 27 (6), नवम्बर, 1980, 529–538.

14.फर्नाडीज, एम. एस.; अ स्टडी ऑफ दा साइकोलॉजिकल आस्पेक्ट्स ऑफ ह्युमन रिलेशन इन ऐंड्यूकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ हैड्स ऑफ स्कूल्स, इण्डियन ऐंड्यूकेशनल रिव्यू, 17 (2), 1990, 66–67.

15.फिशर, बी. बी., एण्ड फिशर, एल.; स्टाइल्स इन टीचिंग एण्ड लर्निंग, एड्यूकेश्नल लीडरशिप, जेनुअरि, 1979, 245–254.

16.फेयरस्टीन, एम.; वर्कस्टाइल : डेफिनिशन, एम्पिरिकल सपोर्ट एंड इम्प्लिकेशन फॉर प्रिवेंशन, इवैल्यूएशन एंड रिहैबिलिटेशन ऑफ़ ऑक्यूपेशनल अप्पर एक्सट्रीमिटी डिसऑर्डर्स. इन एस. सौटेर – एस.डी.मून (एडीज.) बियॉन्ड बायोमैकेनिक्स : साइकोसोशल आस्पेक्ट्स ऑफ़ मैस्कुलोस्केलेटल डिसऑर्डर्स इन ऑफिस वर्क, टेलर – फ्रांसिस लिमिटेड, लंदन, 1996, 177–206.

17.बेलबिन्स, आर. एस. टीमरोल्स एट वर्क, बटरवर्थ– हनेमेन लिमिटेड,1993

18.बोगडन, रोबर्ट सी. एण्ड सारी कनोप, विक्लेन; क्वालिटेटिव रिसर्च फॉर ऍड्यूकेशनः एन एन्ट्रोडक्शन टू बियरी एण्ड मैथड्स, बोस्टन, सी ए, एलन एण्ड बेकन, 1992.

19.ब्लूम, बेन्जामिन एस.; ह्युमन कैरेक्टेरिस्टिक्स एण्ड स्कूल लर्निंग, न्यूयार्क, मैकग्रॉ–हिल. 1976.

20.मधु राज; एन्साइक्लोपेडिक डिक्शनरी ऑफ साइकोलोजी एण्ड ऍड्यूकेशन, देहली, अनमोल पब्लिकेशन, 1996, 1–3.

21.मिगलियेटी, सेन्थिया एल. एण्ड स्ट्रेन्ज, कॉरनी सी.; लर्निंग स्टाइल्स, क्लास रूम एन्वायर्नमेन्ट प्रिफ्रेन्सिज, टीचिंग स्टाइल्स एण्ड रेमेडियल कोर्स आउटकम्ज फॉर अण्डर प्रिपेयर्ड एडल्ट्स एट ऍ टू–इयर कॉलेज, कम्यूनिटी कॉलेज रिव्यु, 26 (1), 1998, 1–19.

22.मेयर्स एण्ड ब्रिग्स; मैयर्स बिग्स टाइप इण्डीकेटर, टीम रिपोर्ट, पालो आल्टो, सी.ए. कल्सल्टिंग साइकोलॉजिस्ट्स, आई.एन.सी., 1977.

23.मेयर्स, आई. बी.; मेयर्स–ब्रिग्गस टाइप इण्डीकेटर (फॉर्म जी), कन्सल्टिंग साइकोलॉजिस्ट्स प्रेस : पालो आल्टो, सी. ए., 1997.

24.मैकइन्टायर, मेरी जी.; एट www.yourofficecoach.com/Topics/work_style_ differences.html.

25.मैक्मिलन, जेम्स एच. एण्ड शूमाकर सेली; रिसर्च इन ऍड्यूकेशनः अ कान्सेप्चुअल इन्ट्रोडक्शन, न्यूयार्क, लोंगमैन, 1997.

26.रायजादा, बी. एस.; शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1997.

27.रिच, इजराइल एण्ड अल्मोज्लिनो, मल्का; एड्यूकेशनल गोल प्रिफेटेन्सेज अंग नोवाइस एण्ड वेटर्न टीचर्स ऑफ साइंस एण्ड ह्युमिनिटीज, टीचिंग एण्ड टीचर एड्यूकेशन, 15(16), 1999, 613–629.

28.रीसर, अल्फ्रेड डब्ल्यू.; डोमिनेन्ट एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाइल्स ऑफ ई एस एल एडमिनिस्ट्रेटर्स, टी. ई. एस. ओ. एल. क्वार्टरली, 20 (2), 1986, 338–343.

29.लुराबियन, के. एल.; अ मेनुअल फॉर राइटर्स ऑफ टर्मपेपर्स, थिसिस एण्ड डिजरटेशन, शिकागो, दी यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1987.

30.लैथवुड़, के. ए.; दा प्रिसिंपल्स रोल इन टीचर डवलेपमेंट, इनः फुलन एम. हारग्रीब्ज ए (एडीज.) टीचर डवलेपमेन्ट एण्ड ऍड्यूकेशनल चेंज, फाल्मर प्रेस, लंदन, 1992.

31.वर्र, पीटर एंड कोनेर, मार्क; दा मेज़रमेंट ऑफ़ इफेक्टिव वर्किंग स्टाइल्स ड्यूरिंग एंट्री–लेवल ट्रेनिंग, जर्नल ऑफ़ ऑक्यूपेशनल एंड आर्गेनाइजेशनल साइकोलॉजी, दा ब्रिटिश साइकोलॉजिकल सोसाइटी, 65(1), मार्च, 1992, 17–32.

32.वाटसन, जे.; अ फोर्मल एनालसिस ऑफ सोशियल इन्टरएक्शन, सोशियोमेट्री, 21(4), 1958, 269–280.

33.विथल, जे.; दा डवलेपमेण्ट ऑफ ए टेक्निक फॉर दा मैनेजमेण्ट ऑफ सोश्ल इमोश्नल क्लाइमेट इन क्लासरूम. जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेण्टल ऍड्यूकेशन, 1949, 17, 347–361.

34.विर्कमैनफिंक, टेलरिंग पिपल टू जॉब एण्ड जॉब्स टू पिपल एट www. execunet.com

35.स्पून, जे. सी. एण्ड शैल, जे. डब्ल्यू.; अलाइनिंग स्टूडेन्ट्स लर्निंग स्टाइल्स विद् इन्सट्रक्टर्स टीचिंग स्टाइल्स, जर्नल ऑफ इण्डस्ट्रियल टीचर ऍड्यूकेशन, 35, (2), (विन्टर), 1998, 41–56.

36.स्टिट्ट–गोहदेस, डब्ल्यू. एल.; बिजनेस ऍड्यूकेशन स्टूडेन्ट्स प्रिफेरेड लर्निंग स्टाइल्स एण्ड दीयर टीचर्स प्रिफेरेड इन्स्ट्रक्शनल स्टाइल्स : डू दे मैच ? डेल्टा पी एप्सीलन जर्नल, समर, 2001, 43 (3).

37.स्मिथ, जे. एल.; क्वान्टिटेटिव वरसस क्वालिटेटिव रिसर्च : एन अटेम्पट टू क्लेरिफाइ दा इश्यू, ऍड्यूकेशनल रिसर्चर, 1983, 12 (3), 6–13.

38.हरमन, ए. एट ऑल; रोल ऑफ दा फील्ड–डिपेन्डेंट एण्ड फील्ड–इनडिपेन्डेन्ट काग्नीटिव स्टाइल इन एकेडिमिक इवेल्यूशनः अ लॉन्गिट्यूडिनल स्टडी, जर्नल ऑफ एड्यूकेशनल साइकोलॉजि, 69 (3), जून, 1977,

197—211.
39.हैमलिच, जे. ई.; मेजरिंग टीचिंग स्टाइलः अ कोरिलेशनल स्टडी बिटविन दा वेन टिलबर्ग, हैमालिच सेन्सिटिविटी मेजर एण्ड दा मैयर्स–ब्रिग्स पर्सनेल्टी इन्डीकेटर ऑन एडल्ट एड्यूकेटर्स इन सेन्टर्ल ओहियो, डॉक्टोरल डिजरटेशन, दा ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी, 1990.
40.हैमलिच, जे. ई. एण्ड नोरलैण्ड, ई.; टीचिंग स्टाइलः व्हेयर आर. वी. नाऊ.? न्यू डाइरेक्शन्स फॉर एडल्ट एण्ड कन्टीन्यूइंग ऍड्यूकेशन, 93 (स्प्रिंग), 2002, 17—25.
41.www.best-career-match-com/work-style-preferences-description.html
42.www.cardinalcareers.stanford.edu/start/assessments/work/20style.pdf
43.www.creativelearningcenter.com/aboutworkingstyle.html

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org